5

अरुणाचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में सुबह की सभा
एक अध्ययन

विवेक सिंह*

विद्यालय न केवल सीखने का स्थान होता है, बल्कि यह बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए अवसर प्रदान करता है। कोई भी शैक्षणिक संस्थान समाज से अलग रहकर काम नहीं करता है बल्कि समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाएँ, इसको प्रभावित करती हैं। भारतीय स्कूली शिक्षा प्रणाली में, प्रार्थना को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है और यह माना जाता है कि सीखने से पहले प्रार्थना करनी चाहिए। छात्रों के बीच अनुशासन और नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करने के लिए भी सुबह की सभा को महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान शोधपत्र अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों में सुबह की सभा की प्रथाओं का पता लगाने का एक प्रयास है। यह सुबह की सभा, प्रार्थना, शपथ ग्रहण की प्रक्रिया और उस पर शिक्षकों और छात्रों के विचारों का अध्ययन करता है। एक सुविधाजनक प्रतिचयन प्रक्रिया का उपयोग करके अरुणाचल प्रदेश के पापुमपारे जिले और राजधानी परिसर के 40 प्राथमिक विद्यालयों का नमूने के रूप में चयन किया गया था। आवृत्ति गणना और सामग्री विश्लेषण को लागू करके सूचना का विश्लेषण किया गया था। अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि अधिकांश विद्यालयों में प्रातःकालीन सभा का अभ्यास किया गया। सभा के दौरान विद्यार्थी, प्रार्थना, शपथ और राष्ट्रगान का अभ्यास करते हैं। कुछ निजी विद्यालय दिन के विचार का भी अभ्यास करते हैं। प्रार्थना के बोल संस्थाओं के प्रकार के अनुसार भिन्न होते हैं। प्रातःकालीन सभा पद्धतियों के प्रति विद्यार्थियों और शिक्षकों की राय सकारात्मक थी।

विद्यालय कोई साधारण इमारत नहीं है बल्कि यह विभिन्न भौतिक और अभौतिक संस्कृतियों की एक जटिल प्रणाली है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ बच्चे के व्यक्तित्व का विकास होता है। विद्यालय सामाजिक मानदंडों और प्रतिबंधों के आलोक में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और व्यवहार का पोषण करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि हर कोई अपने पर्यावरण का उत्पाद होता है और विद्यालयों की संस्कृति इस संबंध में अच्छी मात्रा में इनपुट का योगदान करती है। यहाँ विद्यालय संस्कृति का अर्थ है, विद्यालय की गतिविधियों, विचार, आदर्श, नैतिकता और सामग्री। सुबह की सभा, विद्यालय संस्कृति के महत्वपूर्ण

* *सहायक प्रोफेसर,* शिक्षा विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश 791 112

घटकों में से एक है। सुबह की सभा कोई साधारण शैक्षिक गतिविधि नहीं है बल्कि यह व्यक्ति के भावनात्मक और मनोदैहिक आयाम को भी प्रभावित करती है। बचपन गठन की एक अवस्था होती है और इस अवस्था की अनुभूति, विश्वास, आदत और प्रथाएँ जीवन भर कायम रहती हैं। किसी भी विद्यालय की नैतिकता और मूल्य उसके दर्शन पर निर्भर करते हैं; यही कारण है कि विद्यालय की सुबह की सभा अलग समाजों में भिन्न होती है। प्रत्येक विद्यालय के सुबह की सभा की अपनी नीति और प्रथा होती है जिसमें कुछ विशिष्टता और विविधताएँ होती हैं। कुछ विद्यालय सुबह की सभा का पालन करते हैं, कुछ सुबह की सभा और शपथ का पालन करते हैं और कुछ विद्यालय सुबह की सभा तथा राष्ट्रगान का पालन करते हैं एवं कुछ इसका अभ्यास नहीं करते हैं।

सीखना एक सतत प्रक्रिया है और यह न केवल कक्षा शिक्षण में बल्कि विभिन्न पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी होता है (त्रिपाठी और कुमार, 2020)। प्रातः कालीन सभा के सत्र के दौरान, विद्यार्थी प्रार्थना करते हैं शपथ लेते हैं, और कुछ महत्वपूर्ण घोषणाएँ की जाती हैं। कुछ विद्यालयों में शिक्षक छात्रों की वर्दी, जूता, बाल कटवाने, नाखून, स्वच्छता की जाँच करते हैं (मेहता, 2016)। मॉर्निंग असेंबली आत्म-सम्मान, आत्म-अनुशासन, ईमानदारी, दक्षता आदि जैसे कई मूल मूल्यों को सिखाती है जो न केवल विद्यार्थी जीवन में, बल्कि उनके पूरे जीवन में मदद करती है (गंभीर, 2020)। और आत्मविश्वास के स्तर, सुनने की क्षमता और सामाजिक शिष्टाचार को बढ़ाती है (मेहता, 2016)।

सुबह की सभा की प्रथा भारत और अन्य देशों के अधिकांश विद्यालयों में देखी गई है। भारतीय दर्शन की मान्यता है कि नम्रता ज्ञान की कुंजी है ("विद्या ददाति विनयम"), इसलिए कहा जाता है कि शैक्षिक गतिविधियों से पहले सर्वशक्तिमान की प्रार्थना महत्वपूर्ण है। कुछ का कहना है कि समर्पण की याद दिलाने के लिए सुबह की सभा जरूरी है। दूसरी ओर, कुछ लोग कहते हैं कि विद्यालय धार्मिक प्रशिक्षण नहीं, सीखने का स्थान है। विद्यालय की प्रार्थना कभी-कभी बच्चे को एक निश्चित विश्वास का पालन करने के लिए मजबूर करती है जिसमें उनका विश्वास नहीं होता है, जोकि, धार्मिक स्वतंत्रता के खिलाफ है। कुछ लोगों का कहना है कि सभा के दौरान धार्मिक प्रार्थनाओं से बचना चाहिए। सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि धार्मिक संस्थाओं को छोड़कर अधिकांश विद्यालय सुबह की सभा में धर्म-निरपेक्षता का पालन करते हैं।

अध्ययन का औचित्य

अरुणाचल प्रदेश भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता की भूमि है, जहाँ विभिन्न भाषा, संस्कृति और विश्वास प्रणाली पाई जाती है। औपचारिक शिक्षा इस प्रदेश के लिए एक नई बात है और स्कूली संस्कृति स्थानीय संस्कृति के साथ ज्यादा एकीकृत नहीं है। देश के बाकी हिस्सों की शैक्षिक प्रथाओं की अन्य प्रथाओं की तरह, राज्य के विद्यालयों में भी सुबह की सभा का अभ्यास किया जाता है। अरुणाचल प्रदेश सहित भारत की विद्यालय प्रणाली में विद्यालय की प्रार्थना एक बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधि है।

अतः शोधार्थी के मन में यह प्रश्न आया कि विद्यालयों में प्रातःकालीन सभा की प्रक्रिया क्या है तथा शिक्षक एवं विद्यार्थी इस पर क्या सोचते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान शोध का उद्देश्य अरुणाचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में सुबह की सभा की प्रथाओं और उस पर हितधारकों के विचारों का पता लगाना है।

अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत लेख में शोधकर्ता ने अरुणाचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में सुबह की सभा की प्रथाओं की पहचान करने का प्रयास किया है। शोधकर्ता ने सुविधाजनक प्रतिचयन प्रणाली लागू करते हुए प्रदेश के पापुमपारे जिला एवं राजधानी परिसर के 40 विद्यालयों का चयन किया है। शोध के लिए प्रत्येक विद्यालय का दौरा और विद्यालय की सभा/प्रार्थना और विद्यालय के माहौल का अवलोकन किया गया। इसके साथ ही छात्रों और शिक्षकों के साथ उनके विचारों के बारे में भी बातचीत की गई। कुल 40 विद्यालयों में से 20 सरकारी वित्त पोषित थे और 20 निजी तौर पर धार्मिक या सांस्कृतिक संगठनों द्वारा प्रबंधित थे। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए उपकरण के रूप में एक अवलोकन अनुसूची और एक अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया है।

परिणाम और चर्चा

शोध हेतु प्रत्येक विद्यालय में सुबह की सभा की प्रार्थना और शपथ के बोल और अन्य विवरण नोट किए गए। इसके साथ ही शिक्षकों और छात्रों के साथ सुबह की सभा पर उनके विचारों के बारे में भी बातचीत की गई। विद्यालय अवलोकन के विवरण के आधार पर अध्ययन के परिणाम नीचे प्रस्तुत किए गए हैं—

तालिका 1 से पता चलता है कि तीन निजी विद्यालयों को छोड़कर अधिकांश विद्यालयों में सुबह की सभा और राष्ट्रगान का अभ्यास किया जाता है। दोपहर या शाम की सभा का अभ्यास केवल पाँच निजी विद्यालयों में किया जाता था जोकि सरकारी विद्यालय में नहीं पाया जाता था। 29 विद्यालयों में विद्यालय शपथ ग्रहण की गई। 17 विद्यालयों में 'आज का विचार' का अभ्यास किया गया, जिनमें से 5 सरकारी विद्यालय और 12 निजी विद्यालय थे।

तालिका 1— विद्यालय सभा और गतिविधियों की स्थिति

गतिविधि	सरकारी विद्यालय (20*)	निजी / मिशनरी विद्यालय (20*)	कुल विद्यालय (40*)
सुबह की सभा	20	17	37
दोपहर/शाम की सभा	0	5	5
शपथ	13	16	29
राष्ट्रगान	20	17	37
आज का विचार	5	12	17

*विद्यालयों की संख्या

तालिका 2— विभिन्न विद्यालयों में प्रार्थना के बोल

प्रार्थना गीत	सरकारी विद्यालय	निजी / मिशनरी विद्यालय
दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना…	8	1
आवर फादर हू आर इन हेवेन… इनफिनिट विस्डम एंड सोर्स ऑफ ऑल नॉलेज…		6
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो…	6	2
या कुंदेंदु तुषार हार धवला…		2
वी शैल ओवरकम…		1
फादर वी थैंक फॉर द नाईट…		2
गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु…		1
असतो माँ सद्गमय, तमसो माँ…	1	
ओम सहतावाव्तु…	1	
हे प्रभो आनंददाता…	1	1
जय जय परमात्मन…		1
ऑन दिस विद्यालय योर ब्लेसिंग लार्ड…		1
जीसस…	1	
ऑलमाइटी ओ ऑलमाइटी…		1
गॉड गिव मी द करेज…		
गॉड माय गार्जियन…		1
ओह गॉड गिव अस नॉलेज…		1

तालिका 2 से पता चलता है कि अलग-अलग विद्यालयों में अलग-अलग प्रार्थनाएँ होती हैं। यह पाया गया कि सरकारी विद्यालय की प्रार्थना निजी विद्यालय की प्रार्थनाओं से अलग थी। आमतौर पर सरकारी विद्यालय हिंदी में और निजी विद्यालयों में हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी में प्रार्थना करते हैं। विवेकानंद केंद्र या हिंदू संगठनों से जुड़े निजी विद्यालय में उनकी प्रार्थना हिंदी और संस्कृत में होती है। ईसाई मिशनरी से जुड़े विद्यालय प्रार्थना में अंग्रेजी भाषा में होते हैं। यह भी पाया गया कि सरकारी विद्यालयों में प्रतिदिन विद्यालय में एक प्रार्थना होती है और कुछ निजी विद्यालयों में एक से अधिक प्रार्थनाएं होती हैं। जब प्रार्थना के अर्थ की बात आती है तो सरकारी विद्यालयों की प्रार्थना प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष थी, लेकिन कुछ मिशनरी विद्यालयों की प्रार्थना धर्म से जुड़ी हुई थी।

तालिका 3— विभिन्न विद्यालयों में शपथ ग्रहण की गई

शपथ	सरकारी विद्यालय	निजी/मिशनरी विद्यालय
आई एम इंडियन. इंडिया इज माय कंट्री…	13	12
वी द पीपुल ऑफ इंडिया…	0	1
आइ कमिटेड माइसेल्फ टू एक्सेप्ट अ क्लीन इंडिया…	0	1
आइ टेक द परसेप्ट टू अब्स्तैन फ्रॉम किलिंग…	0	2

तालिका 3 से पता चलता है कि सभी सरकारी विद्यालय और अधिकांश निजी विद्यालय शपथ का पालन करते हैं "आई एम इंडियन. इंडिया इज माय कंट्री... जिसका हिंदी अर्थ है— मैं भारतीय हूँ, भारत मेरा देश है और सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं देश से प्यार करता हूँ और मुझे इसकी समृद्ध और विविध विरासत पर गर्व है। मैं हमेशा इसके लायक बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता, शिक्षकों, सहपाठियों और सभी बड़ों का सम्मान करूँगा और सभी के साथ शिष्टाचार का व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और अपने लोगों के लिए उनकी भलाई के लिए समर्पण की प्रतिज्ञा करता हूँ।" एक निजी विद्यालय अभ्यास संवैधानिक प्रस्तावना "वी द पीपुल ऑफ इंडिया... हम भारत के लोग...", एक अन्य निजी विद्यालय "आइ कमिटेड माइसेल्फ टू एक्सेप्ट अ क्लीन इंडिया..." जिसका हिंदी अर्थ है— "मैंने एक स्वच्छ भारत को स्वीकार करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया... अपने परिवार और दोस्त को ऐसा करने के लिए प्रेरित किया" और दो विद्यालय "आइ टेक द परसेप्ट टू अब्स्तैन फ्रॉम किलिंग..." जिसका हिंदी अर्थ है— "मैं शपथ लेता हूँ कि मै जीवहत्या से परहेज करूँगा..." का अभ्यास करते हैं।

सुबह की सभा के आयोजन की प्रक्रिया

आमतौर पर प्रार्थना के समय सभी विद्यार्थी सभा स्थल पर आते हैं। शिक्षक उन्हें कतार में लगाने में मदद करते हैं। लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग कतार की व्यवस्था की गई थी और शिक्षक छात्रों के सामने खड़े थे। कतार की उचित व्यवस्था के बाद दो या दो से अधिक विद्यार्थी आगे आते हैं और प्रार्थना शुरू करते हैं और बाकी विद्यार्थी दोहराते हैं। आमतौर पर प्रार्थना के बाद शपथ, दिन के विचार और राष्ट्रगान होता है। कुछ विद्यालयों में शपथ और दिन का विचार का चलन नहीं होता था। प्रातःकालीन सभा समाप्त होने के बाद प्राचार्य/प्रधानाध्यापक/शिक्षक कभी-कभी व्याख्यान या महत्वपूर्ण घोषणाएँ करते हैं। सुबह की सभा के बाद छात्र-छात्राएँ कतार में लगकर अपनी-अपनी कक्षा में चले जाते हैं, लेकिन कुछ विद्यालयों में विद्यार्थी तितर-वितर होकर कक्षा में जाते हैं।

विद्यार्थी विचार

विद्यार्थी सुबह की सभा को सकारात्मक रूप में देखते हैं। वे कहते हैं कि इस दौरान हमें अन्य छात्रों से मिलने का मौका मिलता है, साथ ही सामूहिक प्रार्थना और विद्यालय की गतिविधियों की औपचारिक शुरुआत का अवसर देता है। एक विद्यार्थी ने कहा कि "सुबह की सभा मन की शांति देती है जो हमें सही काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है।" इसी तरह अन्य छात्रों ने कहा कि प्रार्थना के साथ दिन की शुरुआत सकारात्मक ऊर्जा देती है; हमें समूह के सामने बोलने का मौका मिलता है और अन्य कक्षा के छात्रों से मिलने का मौका मिलता है। जब प्रार्थना का अर्थ पूछा गया तो विद्यार्थी हिंदी और अंग्रेजी प्रार्थनाओं के अर्थ को समझने में सक्षम थे क्योंकि हिंदी सामाजिक संपर्क

की सामान्य भाषा है, अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम के रूप में, लेकिन संस्कृत प्रार्थना को विद्यार्थी समझने में असमर्थ थे।

शिक्षक विचार

कुछ शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय एक मंदिर की तरह है और शिक्षा एक तपस्या (ध्यान) है, इसलिए शिक्षा से पहले हमें अपने भगवान से ज्ञान के लिए अनुरोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सुबह की सभा विद्यालय में अनुशासन बनाएँ रखने में मदद करती है और प्रार्थना मन को शांत करती है। इस दौरान संचार विद्यालय के हर सदस्य तक पहुँचता है। एक शिक्षक ने कहा "सुबह की सभा छात्रों में अनुशासन पैदा करती है, मंच पर विचार देने से उनमें अधिक आत्मविश्वास पैदा होता है और मंच का भय समाप्त हो जाता है"।

अध्ययन के परिणाम और चर्चा

अध्ययन के परिणाम के आधार पर यह पाया गया कि अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों में सुबह की सभा एक आम बात थी। इन सत्रों के दौरान प्रार्थना, शपथ, राष्ट्रगान का अभ्यास हुआ। आमतौर पर, सरकारी विद्यालय धर्मनिरपेक्ष प्रार्थना का पालन करते हैं, जबकि कुछ निजी विद्यालय धार्मिक प्रार्थनाओं (ईसाई धर्म और हिंदू धर्म से संबंधित) का अभ्यास करते हैं और विद्यालयों से आदिवासी प्रार्थना लगभग अनुपस्थित थी। इसके पीछे कारण यह हो सकता है कि औपचारिक शिक्षा इस राज्य के लिए नई थी और शिक्षा की भाषा या तो अंग्रेजी या हिंदी थी, स्थानीय भाषा नहीं थी और विद्यालयों की प्रथाएँ लोकप्रिय संस्कृति से प्रभावित थीं और शैक्षिक मिशनरी ज्यादातर ईसाई धर्म या हिंदू धर्म आधारित थे, स्थानीय आस्था से नहीं। अधिकांश विद्यालयों में शपथ ग्रहण का अभ्यास किया गया, जो राष्ट्रीय भावना से संबंधित था। ऐसा इसलिए हो सकता है, क्योंकि यह भारत का सीमावर्ती राज्य था।

निष्कर्ष

अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों में सुबह की सभा एक आम बात है। सभा के दौरान कुछ निजी विद्यालयों को छोड़कर अधिकांश विद्यालयों में प्रार्थना और राष्ट्रगान गाया गया। सभी सरकारी और कुछ निजी विद्यालय हर दिन एक प्रार्थना गीत का अभ्यास करते हैं, लेकिन कुछ निजी विद्यालयों में एक से अधिक प्रार्थनाएँ होती हैं। जब प्रार्थना के अर्थ की बात आती है तो कुछ मिशनरी विद्यालयों की प्रार्थनाओं को छोड़कर अधिकांश विद्यालय प्रार्थना को धर्मनिरपेक्ष श्रेणी में वर्गीकृत किया जा सकता है। कई विद्यालय नागरिकता राष्ट्रवाद और मौलिक कर्तव्य के मूल्यों से जुड़ी शपथ का अभ्यास करते हैं। कुछ निजी विद्यालय भी दिन के विचारों का अभ्यास करते हैं। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों में सुबह की सभा अरुणाचल प्रदेश के बच्चों के बीच, बच्चे के नैतिक विकास और नागरिकता मूल्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ

गंभीर, आर.के. 2020. द एजुकेशनल वैल्यू ऑफ स्कूल प्रेयर/मॉर्निंग असेंबली. *MERI जर्नल ऑफ एजुकेशन*. XV (2), पृ.सं. 128–133.

नौमेस्कु, वी. 2019. पेडागोगिस ऑफ प्रेयर : टीचिंग ओर्थोडाक्सी इन साउथ इंडिया. *कंपेरेटिव स्टडीज इन सोसाइटी एंड हिस्ट्री*. 61(2), पृ.सं. 389–418. Doi:10.1017/S0010417519000094

फ्रांसिस, एल.जे. और एल.डब्ल्यू. ब्राउन. 1991. द इनफ्लुएंस ऑफ होम, चर्च एंड स्कूल ऑन प्रेयर अमंग सिक्सटीन ईयर ओल्ड एडोलसेंटस इन इंग्लैंड. *रिव्यू ऑफ रिलीजियस रिसर्च*. 33(2), पृ.सं. 112–122.

मेहता, आर. 2016. इम्पोर्टेंस ऑफ मोर्निंग असेंबली. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स आर्ट एंड साइंस*. 7(3), पृ.सं. 4–9. http:// www.casirj.com

रोमानोव्सकी, एम.एच. 2002. इज *स्कूल प्रेयर द आंसर*? द *एजुकेशनल फोरम*. 66(2), पृ.सं. 154–161. DOI:10.1080/00131720208984817

त्रिपाठी, एम.के. और एस. कुमार. 2019. *मोर्निंग असेंबली एज ए लर्निंग एक्सपीरियंस, लर्निंग कर्व*. 4. पृ.सं. 28–31.